Dr. Krishna singh
Hindi Dept.
Raniganj Girl's College
Hindi (hns) VI th semester - Topic -आलोचना

नंददुलारे वाजपेयी

आ. नंददुलारे वाजपेयी 1930 के आस - पास आलोचक के रूप में हिंदी साहित्य में आये थे। उनकी पहली कृति 'हिंदी - साहित्य : बीसवीं शताब्दी' ने हिंदी जगत का ध्यान आकृष्य कर लिया था। 1940 ई. में दूसरी कृति 'जयशंकर प्रसाद' प्रकाशित हुई। इसके बाद तीसरी पुस्तक 'प्रेमचंद' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में इनकी दृष्टि अधिक संतुलित है और प्रेमचंद के सभी पक्ष को सराहा है। आधुनिक युग के साहित्य विकास का मूल्यांकन करने वाली इनकी चौथी पुस्तक 'आधुनिक साहित्य' (1950) है। इस किताब में वाजपेयी जी का आलोचक - व्यक्तित्व अधिक निखरकर सामने आता है। 1955 में इनकी महत्त्वपूर्ण समीक्षा कृति 'नया साहित्य : नये प्रश्न ' प्रकाशित हुआ। इस कृति में व्यक्तियों की चर्चा कम हुई है तथा सिद्धान्तों और प्रवृत्तियों का विवेचन अधिक किया गया है। प्राचीन कवियों में वाजपेयी जी ने 'सूरदास' को अधिक महत्त्व दिया है। उनकी 'महाकवि सूरदास' कृति सौंदर्यनिष्ठ साहित्य-चेतना के विश्लेषण का उत्तम उदाहरण है। वाजपेयी जी के निबंधों के तीन संग्रह है - राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएं, राष्ट्रीय साहित्य तथा अन्य निबंध और प्रकीर्णिका भी प्रकाशित हुए है। महाकवि निराला भी लगभग इसी समय प्रकाशित हुआ। 'कवि निराला' में निराला की जीवनी, व्यक्तित्व, कृतियाँ, काव्य-विकास, काव्य रूप, काव्य भाषा, कला, दार्शनिकता आदि की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। 1967 में वाजपेयी जी ने 'धर्मयुग' में नयी कविता के संबंध में एक लेख लिखकर नये कवियों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। अब ये निबंध 'नयी कविता' शीर्षक से प्रकाशित हुए है। वाजपेयी जी के दिगवंत होने के बाद उनकी कई कृतियाँ प्रकाशित हुई है जैसे - कवि सुमित्रानंदन पंत, रस - सिद्धान्त, साहित्य का आधुनिक युग, आधुनिक साहित्य-सृजन और समीक्षा तथा रीति और शैली विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन कृतियों में आ. वाजपेयी के समय - समय पर लिखे गये निबंधों को क्रमबद्ध करके प्रकाशित कर दिया गया है। वस्तुतः इनकी अंतिम कृति 'नयी कविता' ही है। छायावाद युग से लेकर नयी कविता तक कि समीक्षा-यात्रा करते हुए हिंदी आलोचना के विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।